

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 11th



aglasem.com

Class : 11th
Subject : History
Chapter : 9
Chapter Name : शांति

Q1 क्या आप जानते हैं कि एक शांतिपूर्ण दुनिया की ओर बदलाव के लिए लोगों के सोचने के तरीके में बदलाव जरूरी है? क्या मस्तिष्क शांति को बढ़ावा दे सकता है? और, क्या मानव मस्तिष्क पर केंद्रित रहना शांति स्थापना के लिए पर्याप्त है?

Answer. गौतम बुद्ध ने कहा था कि सभी दुष्कर्म मन के कारण उपजते हैं। यदि मन रूपांतरित हो जाए तो क्या दुष्कर्म बने रह सकते हैं।

हमारे मस्तिष्क में चलने वाले विचार हमारी सोच को जन्म देते हैं, और यही सोच हमारे व्यवहार में झलकती है। हिटलर के मस्तिष्क में वर्साय की संधि में जर्मनी के अपमान की भावना घर कर गई थी, जिसका नतीजा द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में दिखा, जिसने विश्व शांति के लिए लोगों में जागरूकता पैदा की। इसके बाद के यूरोप में शांति के महत्व को समझा गया।

बातचीत से लोगों के विचारों को शांतिपूर्ण बनाने का प्रयास होना चाहिए। अच्छी शिक्षा, मनोविश्लेषण व निरोगकारी तकनीकें हमारे मस्तिष्क को शांत बनाए रखने में कारगर सिद्ध हो रही हैं। यदि हमारा दिमाग शांत हो तो वैश्विक शांति की कल्पना को साकार करना इतना मुश्किल भी नहीं है।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि महज़ मानव मस्तिष्क पर केंद्रित रहकर शांति एक सीमा तक ही स्थापित हो सकती है। एक देश की सामाजिक संरचना, न्याय व्यवस्था व राजनीतिक व्यवस्था भी शांति बनाए रखने में अहम योगदान देती है। अतः खुशहाल समाज, निष्पक्ष न्याय व्यवस्था व लोकतंत्र मनुष्य के मस्तिष्क को शांत रखते हैं, जिससे हिंसा नहीं पनपती है।

Page : 137 , Block Name : प्रश्नावली

Q2 राज्य को अपने नागरिकों के जीवन और अधिकारों की रक्षा अवश्य ही करनी चाहिए। हालांकि कई बार राज्य के कार्य इसके कुछ नागरिकों के खिलाफ हिंसा के स्रोत होते हैं। कुछ उदाहरणों की मदद से इस पर टिप्पणी कीजिए।

Answer. यह सत्य है कि किसी राज्य को अपने नागरिकों के जीवन को अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए परंतु विश्व भर में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब राज्य की कुछ नीतियों व कार्यों के कारण नागरिकों में आपसी हिंसा भड़क उठी। इस तरह का एक महत्वपूर्ण उदाहरण रवांडा नरसंहार का है। निर्मम हत्या करने से रोक

1994 में जब रवांडा सरकार हुतु समुदाय के लोगों को लगभग 500000 तुत्सी समुदाय के लोगों की निर्मम हत्या करने से नहीं रोक पाई। रवांडा अपने ही लोगों के जीने के अधिकार की रक्षा नहीं कर पाया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि राज्य का एक समुदाय अपने को दूसरे समुदाय से ऊंचा समझने लगा था।

जर्मनी में भी हिटलर ने यहूदियों के खिलाफ यही किया था। कई बार राज्य अपने को सबसे अलग, उच्चतम और सर्वश्रेष्ठ मानने लगते हैं। इसके चलते नागरिक हर हाल में अपनी साख बचाने के लिए युद्ध तक कर लेते हैं। वह दूसरे लोगों को हानि पहुंचाते हैं।

हाल ही में म्यांमार के बुद्ध समुदाय द्वारा नरसंहार करके रोहिंग्या मुस्लिमों को शरणार्थी बनना पड़ गया है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि म्यांमार सरकार ने कानून में बदलाव के द्वारा रोहिंग्याओं को नागरिक मानने से इंकार कर दिया, जिसके चलते उन्हें हिंसा झेलनी पड़ी और देश छोड़ना पड़ा।

इसलिए राज्य को चाहिए कि वह नागरिकों के बीच आपसी सौहार्द्र व शांति बनाए रखे। ऐसा तभी होगा जब राज्य समानता, स्वतंत्रता, उदारता, न्याय व धर्मनिरपेक्षता का पालन करे।

Page : 137 , Block Name : प्रश्नावली

Q3 शांति को सर्वोत्तम रूप में तभी पाया जा सकता है जब स्वतंत्रता, समानता और न्याय कायम हो। क्या आप सहमत हैं?

Answer. स्वतंत्रता, समानता और न्याय शांति की प्राप्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन तीनों की अनुपस्थिति में समाज में अव्यवस्था फैल जाती है, नागरिकों का राज्य से भरोसा उठ जाता है, वह विद्रोह पर उतर आते हैं।

स्वतंत्रता के अभाव में लोग गुलाम जैसा महसूस करते हैं। वे अपने अधिकारों के लिए हिंसा पर उतर आते हैं। यदि समानता न हो तो एक समुदाय दूसरे समुदाय को प्रताड़ित करता है, और यदि पीड़ित समुदाय को न्याय न मिले तो युद्ध जैसा माहौल बन सकता है जैसा कि रवांडा में घटित हुआ था।

अतः संपूर्ण शांति के लिए स्वतंत्रता, समानता और न्याय महत्वपूर्ण आवश्यकताएं हैं।

Page : 137 , Block Name : प्रश्नावली

Q4 हिंसा के माध्यम से दूरगामी न्यायोचित उद्देश्यों को नहीं पाया जा सकता। आप इस कथन के बारे में क्या सोचते हैं?

Answer. महात्मा गांधी ने कहा था कि हिंसा जब कोई अच्छा कार्य करती प्रतीत होती है तब अच्छाई अस्थाई होती है जबकि इससे जो बुराई होती है वह स्थाई होती है। इसका आशय यह है कि हिंसा के माध्यम से दूरगामी न्यायोचित उद्देश्यों को नहीं पाया जा सकता।

इसे हम आतंकवाद की मदद से समझ सकते हैं। आतंकवाद क्रूर हिंसा की मदद से अपने लक्ष्य पाने की विचारधारा रखता है। कभी कभी वह अपने लक्ष्य पाने में सफल भी हो जाता है पर वह चिरस्थाई नहीं होते। इसके चलते अनेक लोगों में भी प्रतिशोध पनपता है, अत्यधिक हिंसा जन्म लेती है। आतंकवाद की मदद से एक शांत समाज कभी नहीं बन सकता।

अतः हम कह सकते हैं कि हिंसा से हिंसा जन्म लेती है और यदि हिंसा से कुछ मिलता भी है तो वह मात्र क्षणिक होता है।

Page : 137 , Block Name : प्रश्नावली

Q5 विश्व में शांति स्थापना के जिन दृष्टिकोणों की अध्याय में चर्चा की गई है उनके बीच क्या अंतर है?

Answer. उपयुक्त अध्याय में तीन दृष्टिकोणों का उल्लेख किया गया है।

प्रथम दृष्टिकोण यह बताता है कि राष्ट्र संप्रभु होते ही हैं और अपने हितों की रक्षा के लिए उनमें संघर्ष व विवाद होना परिहार्य है। हम इसे बेहतर प्रबंधन से महज नियंत्रित कर सकते हैं ताकि दो देशों के बीच की लड़ाई से अन्य लोगों को हानि न पहुंचे।

इसके विपरीत दूसरा दृष्टिकोण बस इतना ही भिन्न है कि भले ही राष्ट्र संप्रभु होते हैं पर वे आर्थिक रूप से एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। इस दृष्टिकोण से दो देशों की सामाजिक व आर्थिक भागीदारी उनके संबंधों को लचीला बनाती है और विश्व शांति प्रबल होती है।

अंत में तीसरा दृष्टिकोण तो यह मानता है कि राष्ट्र नामक व्यवस्था का दौर ही समाप्त हो चुका है, तथा अब वैश्वीकरण ही विश्व को जोड़ कर रख रहा है। बहुराष्ट्रीय निगमों व गैर सरकारी संगठन विश्व को एक नया रूप दे रहे हैं, जिसमें राष्ट्र सीमारहित दिख रहे हैं। इससे राष्ट्रों की संप्रभुता मिट सी गई है और वैश्विक शांति का आधार तैयार हो चुका है।

इस प्रकार तीनों दृष्टिकोण शांति व्यवस्था बनाए रखने के नए तरीकों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

Page : 137 , Block Name : प्रश्नावली